''गुरूमंत्र गीता''

*डॉ. अनुजा शर्मा

परिचयः

श्रीमदभगवद्गीता दर्शनशास्त्र का भारत में ही नहीं, पूरे विश्व में अद्वितीय ग्रंथ है। सदियों से विधवानों और विचारकों ने इसका अध्ययन मनन किया और इससे प्रेरणा प्राप्त की। गीता अमृतवाणी है, जो मुर्दे में जान डाल देती है। निराश के लिए आशादीप बन जाती है, टूटे मन को फिर से जोड़ देती है। मोह माया की मरीचिका में भटकते जीव को सत्यमार्ग पर लाकर खड़ा कर देती है। संदेह भ्रम भँवर में फंसे हुए के लिए सुरक्षा नौका बन जाती है, कर्त्तव्यपथ तलाशते बटोही को सन्मार्ग दरसा देती है तथा जीवात्मा के जीवत्व को नष्टकर उसका शुद्ध आत्मा से एकाकार करा देती है। इसी क्रम में स्वामी योगानन्द सरस्वती के अनुसार – 'गीता' योगी के लिए योगाशास्त्र, दार्शनिक के लिए विज्ञान, नैत्तिक के लिए नीति और साधु के लिए सदाचार है। गीता हमें ''करना '' सिखाती है, महाभारत हमें ''रहना'' सिखाती है, रामायण हमें ''जीना'' सिखाती है और भागवत हमें ''मरना'' सिखाती है।

आज के दौर में गीता धार्मिक ग्रंथ ही नही रही बल्कि कारोबारी ''महाग्रंथ'' का रूप भी ले चुकी है। गीता में ''मैनेंजमेंट फॉमूलों से लेकर ''लीडरशिप के गुणों ''और ''बिजनेस सूत्रो की भरमार है। यही वजह है कि देश ही नहीं विदेशों के दिग्गज प्रबंध संस्थान भी गीता ज्ञान को अपनाने में लगे है।

गीता का कारोबारी विजन–

मैनेजमेंट गुरू और बिजनेस गुरू अब कॉरपोरेट के युद्धक्षेत्र के अजुनों के लिए गीता की नई व्याख्या रच रहे है। यू–टयूबर 'विवेक विंद्रा' गीता के श्लोकों की आधुनिक उद्धरणों द्वारा व्याख्या करके युवाओं को प्रेरित करने मे लगे है। युवाओं में जोश भरकर उन्हें नकारात्मकता से दूर ले जा रहे है। गीता के श्लोकों से मैनेजमेंट गुरू 'लीडरशिप' के निचोड़ निकाले जा रहे है। ''निष्काम कर्म'' कॉरपोरेट जगत का नया स्लोगन है। पिछले कुछ सालों में गीता में निहित मैनेंजमेट के मंत्रो का ज्ञान कराने वाली कई किताबें लिखी गई है। इनमें प्रमुख है' –

बिजनेस मैनेजमेंट ''द गीता वे' – स्वामी सोमेश्वरानंद/मैनेजमेंट लीडरशिप–

''थू भगवतगीता'' – अरूण कुमार/भगवदगीता ऑन इफेक्टिव लीडरशिप – पूजन रोका।

द गीता एण्ड मैनेजमेंट – स्वामी बोधानंद

भगवदगीता – इकोनॉमिक डेवलपमेंट एण्ड मैनेजमेंट –ए.के श्रीवास्तव

नेपाली मैनेजमेंट गुरू पूजन रोका ने अपनी किताब ''भगवद्गीता ऑन इफेक्टिव लीडरशिप'' में गीता में निहित नेतृत्व के सिद्धान्तों को आधुनिक मैनेजरो के लिए कारगर बताया है। वे मानते है कि नेतृत्व के कई समकालीन सिद्धांत 5200 साल पहले लिखी गई गीता से अलग नहीं है। यह बात अलग है कि ये सारे सिद्धांत आध्यामिक दृष्टिकोण लिए हुए है। फिर भी बिना किसी हेर फेर के गीता के सिद्धांत आज भी कारोबार और संगठनों में जस के

तस लागू है। उनकी किताब कॉरपोरेट जगत में खूब पढ़ी जाती है। इसके अलावा कई विद्धानों ने गीता और मैनेजमेंट पर सैकड़ो शोध पत्र प्रकाशित किए है। एम.पी.भट्टणिनी का ''वर्ल्ड मैनेजमेंट लेसन फ्रॉम इंडिया'' गीता में निहित मैनेजमेंट के फंडो का पूरा सार है। कॉरपोरेट जगत में यह खूब पढ़ा जाता है।

सदी के महानतम् वैज्ञानिक अल्बर्ट आंइसटीन'' श्रीमद्भगवद्गीता प्रतिदिन पढते थे। उन्होंने कहा कि गीता में ज्ञान का भंडार है और मुझे आश्चर्य है कि किस तरह भगवान ने इस सृष्टि की रचना की होगी। इसी तरह अमेरीकन साहित्यकार टी एस ईलियट भी गीता के कर्मयोग से प्रभावित थे। भारतवंशी अमेरिकी सुनीता विलियम्स का महिलाओं की श्रेणी में सबसे अधिक 195 दिन अंतरिक्ष में बिताने का रिकार्ड है वे इस यात्रा के दौरान भगवद्गीता की प्रति साथ लेकर गई थी जिससे वे प्रेरणा लेती रही है।

गीता बनी गुरूमंत्र प्रबंधन में – 5200 साल पहले गीता को मैनेजमेंट का मंत्र बनाने में भारत के मार्डन मैनेंजमेट गुरूओं का बड़ा योगदान है। अमेरिका के टॉप के बिजनेस स्कूलों में पढ़ा रहे सी.के. पहलाद, रामचरण विनय, गोविन्दराजन जैसे भारतीय विजनेस गुरूओं ने इसे आगे बढ़ाया। अमेरिका टॉप बिजनेस स्कूल, हावर्ड बिजनेस स्कूल, मिशिगन रॉल, स्कूल ऑफ बिजनेस, केलॉग स्कूल ऑफ बिजनेस जैस संस्थानों में 10 प्रतिशत से ज्यादा प्रोफेसर भारत मूल के है। IIM Bangalore के professor B.madhvan कहते है जहॉ कारोबार के सिद्धान्तों के दावपेंच काम करना बंद कर देते है वहॉ गीता का ज्ञान इससे भी आगे जाकर काम करता है। बाह्यज्ञानी व तपज्ञानी कृष्ण का और उपनिषदों का निचोड़ माना जाता है। गीता ज्ञान का खजाना है, सनातन है, सार्वभौम ग्रन्थ है, यह दिव्यादिव्य वाणी है। महर्षि वेदव्यास के अनुसार श्रीमद्भगवद्गीता के ज्ञान के बाद किन्ही अन्यशास्त्रों के ज्ञान की आवश्यकता नहीं है। गीता को आत्मसात करने वाला मैनेजर शायद ही कभी नाकामयाबी से धबराता है। वास्तव में गीता में हर वो ज्ञान है जो किसी मैनेजर के लिए जरूरी माना जाता है।

दुनिया को सबसे बेहतरीन पेशेवर मैनेजर देने वाले IIM भी समय–समय पर अपने छात्रों को गीता के कर्मयोग, ज्ञानयोग, भत्तियोग का पाठ पढ़ाते है।

कर्मसु कौशलम् – कर्म को कुशलता से करने की प्रेरणा भी मैनेजमेंट गुरू गीता से ही लेते है।

योगस्थः कुरू कर्माणि संडंग त्यक्त्वा धनज्ज्यः।

सिद्धयसिद्धयोंः समो भूत्वा समत्वं योगः उच्यते ।। (2/48)

गीता के दूसरे अध्याय के 50 वें श्लोक

बुद्धियुत्ता जहातीह उभे सुकृतदुष्कृते।

तस्माधोगाय युज्यस्व योगः कर्मसु कौशलम् (2/50)

कर्म में कुशलता ही योग है। कर्म में कुशलता तभी आती है जब मन और बुद्धि को अन्य सभी ओर से हटाकर एक विषय पर केन्द्रित कर दें। जब वैज्ञानिक अपने परीक्षण में खोया हुआ होता है तो वह उस समय योग की अवस्था में ही होता है।

कर्मयोग– अच्छे कर्मों में अपने आपकों खपा देना 'कर्म योग' है।

ज्ञानयोग – किसी विषय की जिज्ञासा के समय अन्य सभी और से ध्यान हटा देना 'ज्ञान योग' है। अर्थात् किसी भी विषय के प्रति एकाग्र होना योग है। I.I.M में तो गीता ज्ञान एक साल के course module का ही हिस्सा है। इस

हिस्से को पढ़ाने के लिए आध्यात्मिक गुरू visiting faculty के रूप में संस्थानों में आते है। ये आध्यात्मिक और मानसिक शक्तियों का कारोबारी प्रबंधन में कुशलता पूर्वक इस्तेमाल के तरीके बताते है। I.I.M Banglore के Prof. B. Madhavan बताते है कि उनके campus में भी समय–समय पर ऐसे व्याख्यान आयोजित किए जाते है। पिछले कुछेक सालों में भगवद्गीता पर होने वाली चर्चा को Prof. Madhavan एक अच्छी शुरूआत बताते है।

कंपनियों पर छाया गीता का खुमार – दुनिया की कई कॉरपोरेट कंपनियों में कर्मचारियों के नैतिक बल, नेतृत्व क्षमता, कार्यक्षमता एवं व्यक्तित्व निखारने के लिए गीता के सूत्रवाक्यों का जमकर सहारा लिया जा रहा है। भारत में तो दफ्तरों की दीवारों पर गीता के श्लोक और उनके हिन्दी, अंग्रेजी अनुवाद के जरिए नैतिकता, का पाठ पढ़ाया जाता है। कहीं कंपनी के मुख्यद्धार पर टंगा नोटिस बोर्ड इसका जरिया होता है तो कहीं SMS की तकनीकी क्रांति का सहारा लिया जाता है।

भारत की सबसे बड़ी जीवन बीमा कंपनी LIC का तो ध्येय वाक्य –

''योगक्षेम्यम् बाह्हमयहम्'' ही गीता से उठाया हुआ है। इसी ध्येय वाक्य के साथ LIC आज भी बीमा सेक्टर का लीडर बना हुआ है।

दिल्ली मेट्रो रेल कॉरपोरेशन (D.M.R.C) ने बहुत ही थोड़े समय में बेहतर कार्यशैली और प्रबंधन के चलते अपनी साख कायम कर ली। अगर (D.M.R.C) अफसरों की मानें तो इसके पीछे कहीं न कही गीता को ज्ञान है। D.M.R.C संभवतः पहला एसा संस्थान है जहॉ Join करने पर कर्मचारी को स्वामी विद्याप्रकाशानंद लिखित ''गीता मकरंद'' की एक प्रति दी जाती है। इसके अतिरिक्त (D.M.R.C) समय–समय motivational work shop भी आयोजित करती है। इसमें गीता मर्मज्ञों को Motivational speech देने के लिए आमंत्रित किया जाता है।

इसका सकारात्मक असर दिखा है कर्मचारियों में टीम भावना (D.M.R.C) में भ्रष्टाचार, तनाव, कामचोरी जैसी कमियॉ न के बराबर है। दिल्ली मैट्रोमेन के कर्त्ताधर्ता और मैट्रोंमेन के नाम से विख्यात ई. श्रीधरन गीता से गहरे प्रभावित थे।

वर्तमान में भौतिकवादी, प्रतिस्पर्धावादी इस युग में मनुष्य नाना दुःखों से ग्रसित है। गीता बताती है दुःखों का निवारण कि कर्म करते हुए कर्म के बंधन में न पड़ना दुःख रहित होने का उपाय है।

यदृच्छालमिसतुष्टो द्वन्द्वातीतो विमत्सरः।

समः सिद्धावसिद्धौ च कृत्वापि न निबध्यते।। (अध्याय 4/22)

कर्म को यज्ञ समझ कर करना हि कर्म के बन्धन से छूटने का उपाय है।

गतसडगस्य मुक्तस्य ज्ञानावस्थिचेतसः।

यज्ञायाचरतः कर्म समग्रं प्रविलीयते।। (अध्याय 4/23)

उपसंहार –

गीता जीवन का गीत है।

गीता जीवन जीने की कला सिखाती है।

गीता हमें motivate करती है कि अपकी बुद्धि और दिमाग में positive विचार रखों जिससे हर समय हर

परिस्थितिओं में positive सोच ही उभरें।

दुःख का मूल कारण आकांक्षाओं का पूरा न होना। अवसाद का मूल कारण चिन्ता, कर्त्तव्य से पलायन का कारण उदासीनता, गीता इन सबसे उबरने का गुरूमंत्र सिखाती है।

सुख दुःखे समे कृत्वा लाभालाभौ जयाजयौ'' इस तरह के ही उपदेश गीता में यत्र तत्र बिखरे पड़े है यदि इन्हें व्यक्ति आत्मसात कर ले तो यही भगवत गीता की सार्थकता है।

***सह–आचार्य**
संस्कृत विभाग,
राजकीय महाविद्यालय, टोंक (राजस्थान)

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. प्रो. राज कुमार गुप्ता – श्रीमद्भगवद् गीता (पुरूष तत्व विहीन)
2. महावीर प्रसाद जोशी – श्रीमद्भगवद् गीता (तत्त्व बोधक पद्यमय भाष्य)
3. डॉ. कपिल कक्कड़ – भगवद्गीता से सीखें सफलता के सूत्र
4. स्वामी अड़गड़ानन्द – श्री मद्भगवद् गीता
5. राधाकृष्णन् – भगवद्गीता
6. विनोद मल्होत्रा – गीता में मैनेजमेंट सूत्र
7. Swami chinmayannd – Shreemad Bhagvad Gita
8. M.D. Pradkar - Studies in the Gita
9. Morarji Desai (Eng.) – A View of the Gita
10. Shree Arvind – Essay on Gita
11. Bal Gangadhar Tilak (Eng.) – Srimad Bhagwad Gita Rahsya
12. R.B. Lal (Eng.) – The Gita is the light of modern science